आध्यात्मिकता एवं चित्रकला का संयोजित सांमजस्य

BALBINDER KUMAR
Research Scholar, Department of Visual Arts, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

आध्यात्मिक अनुभूति के भेद को समझाने हेतु समस्त मानवता में ऋषि–मुनियों, संत–महात्माओं, आध्यात्मिक गुरुओं, चित्रकारों, योगियों का सर्वोच्च स्तर रहा है जिन्होंने सर्वसाधारण मानव जाति को आध्यात्मिकता की प्राप्ति का मार्ग दर्शाने में भिन्न–भिन्न माध्यमों के रूप में योगदान दिया। आध्यात्मिकता की चित्रित अभिव्यक्ति के अन्तर्गत भारतीय चित्रकारों ने साधु–सन्तों, महात्माओं, गुरुओं, अवतारों का यथार्थवादी चित्रण किया व मानवीय भक्ति को एक भाषा प्रदान की जिसने मानवीय आत्मीय बोध को मजबूती प्रदान की तथा प्राणवान भौतिक मानव को आध्यात्मिकता और चित्रकला के सांमजस्य से अभिव्यक्त चित्रित आध्यात्मिक सृष्टि का सर्वोच्च दृश्यात्मक बोध करवाया।

बीज शब्द

आध्यात्मिकता, चित्रकला

मानवीय देह में प्राण शक्ति पुंज का जीवन्त प्रवाह आत्मीय शक्ति कहलाती है तथा यही समस्त मानव जाति को आध्यात्मिक योग, संयोग, नाद ब्रह्म राग, सत्यं, शिवमं, सुन्दरम, धर्म, सूक्ष्मतत्व व परमतत्व के आनन्द का आन्तरिक दृश्य बोध करवाती है। आत्मीय बोध परमशक्ति का सौन्दर्यपूर्ण व आनन्दमयी नाद राग है जिसके लिये जीव प्राणी को बाहरी सौन्दर्य सृष्टि का आन्तरिक आत्मीय शक्तियों द्वारा दृश्यात्मक बोध होना अतिआवश्यक है आध्यात्म मार्ग में यह बोध ध्यान व निरन्तर साधना से अर्जित किया जाता है। बोध मानवीय विचारों भावनाओं, दृश्य, श्रव्य प्रभावों से उत्पन्न आन्तरिक सम्प्रेषण द्वारा सौन्दर्य दर्शन की आत्मीयता के प्रत्यक्ष सत्य रूप के भेद का ज्ञान है जिसमें तत्व की प्रवृत्ति व प्रकृति की संरचनात्मकता तथा उसकी शक्ति पुंज का रहस्य विद्यमान होता है। यह आत्मीय व दृश्यात्मक दोनों माध्यमों से आत्मसात होता है।

मानवीय सृष्टि–दृष्टि में जहां भौतिकता की सर्वत्र बहुतायत्ता है ऐसे में मानवीय शारीरिक इन्द्रियों द्वारा प्राकृतिक सृष्टि का सौन्दर्य दर्शन निरन्तर बना रहता है ऐसे में मानवीय शारीरिक शक्तियों, बौद्धिकता, मानसिकता, चेतन शक्तियों पर आत्मीय शक्ति के नियन्त्रण के माध्यम से परम सौन्दर्य की आत्मानन्दानुभूति प्राप्त होती है जिससे मानवता की सत्य–असत्य के अस्तित्व का दृश्य तथा आत्म बोध प्राप्त होता है वही संसार की दृश्यवान् प्रकृति के सौन्दर्य आकर्षण का गुरूत्वाकर्षण मानवीय मानसिकता को अपने सम्प्रेषण प्रभाव से भौतिकता में विलीन कर लेती है जहां आध्यात्मिकता की जागृति मनुष्य के आत्मीय बोध हेतु अति– आवश्यक होती है जिसमें दृश्यात्मक बोध ही एकमात्र सहायक स्त्रोत रहता है।

सत्यं, शिवं, सुन्दरम की सौन्दर्य दार्शनिकता में सत्य के शिव रूप व शिव तत्व के सुन्दर रूप के सौन्दर्यदर्शन का बोध प्राप्त होता है अर्थात् मानवता की आत्मीयता व शरीर की प्रवृत्ति प्रकृति के सांमजस्य से पाप–पुण्य, सकारात्मकता, नकारात्मकता के साथ–साथ परमतत्व के भेद का साक्षात्

सत्य बोध आत्मीय पुष्टि से दृश्यबोध के रूप में जीवन्त शरीर में सम्प्रेषणात्मक प्रवाहित रहता है। यही आत्मीय आन्तरिक तंरगे, रश्मियाँ मिलकर वैयक्तिक शिव रूप का संयोजित दृश्य बोध करवाती है यही आत्मीय तरगें रश्मियाँ जब भौतिक संसार की सौन्दर्य दृश्यवान् प्रकृति से हमें प्राप्त होती हैं तो हमारा एक–दूसरे से आत्मीय साक्षात्सम्प्रेषण शुरू होता है जिससे आध्यात्मिकता में परमात्मतत्व के दृश्यात्मक सौन्दर्य का साक्षात् सत्य बोध प्राप्त होता है जहाँ सत्य ही शिव है तथा शिव ही सुन्दर है के तथ्य का आत्मीय दृश्यात्मक बोध आत्मानन्दानुभूतिपूर्ण प्राप्त होता है।

आध्यात्मिक अनुभूति के भेद को समझाने हेतु समस्त मानवता में ऋषि–मुनियों, संत–महात्माओं, आध्यात्मिक गुरुओं, चित्रकारों, योगियों का सर्वोच्च स्तर रहा है जिन्होंने सर्वसाधारण मानव जाति को आध्यात्मिकता की प्राप्ति का मार्ग दर्शाने में भिन्न–भिन्न माध्यमों के रूप में योगदान दिया। इन्हीं भिन्न–भिन्न अभिव्यक्त माध्यमों को संयोजित कर दृश्यवान रचना करके साधारण मानव जाति को परमात्मतत्व के अदृश्य रूप रहस्य को प्रस्तुत करना था जिसमें एकमात्र कला के क्षेत्र में मानवीय आध्यात्मिक श्रद्धा, भक्ति, मोक्ष, धर्म की दार्शनिकता की दृश्यात्मक अभिव्यक्ति चित्रकला, मूर्तिकला, पाण्डुलिपियों, चित्रलिपियों, मन्दिरों, भित्तियों में हुई।

चित्र संख्या 1 कुडंलिनी के योगी षट्चक्र

इन समस्त अभिव्यक्तियों में चित्रकला की दृश्यवान शक्ति को कलाकारों, धर्म आचार्यो, धर्म गुरुओं ने सर्वाधिक आत्मसात किया व आध्यात्मिक ग्रन्थों, पोथियों व कुदरत के रूप को चित्रित किया गया क्योंकि चित्रकला ही एकमात्र ऐसा दृश्यवान माध्यम था जिसमें वर्ण का समावेश होता है तथा वर्णों की रंगतो में विषय को बांधने की जो जीवन्त संयोजित शक्ति होती है वह स्थायी तथा आत्मीय अमर रस–भाव लिये होती है। वर्ण तथा उससे उत्पन्न रंगतो की जब भी बात आती है तो उसके साथ मानवीय प्रवृतिप्रकृति के साथ दृष्टि की रंगीन सृष्टि जुड़ जाती है जिसके बाहरी व आन्तरिक दृश्य प्रभावों के सम्पर्क से मानवीय चेतना में भावों, अनुभावों, संचारी भावों, श्रुतियों में सम्प्रेषण उत्पन्न हो जाता है जो विभिन्न तरंगों व तानो, रंगतो, रूपो, कल्पनाओं सौन्दर्य की पुष्टि और बोध कराते हुये रस के रूप में आत्मानन्दानुभूति देते हुये भिन्न–भिन्न अभिव्यक्तियों में प्रकट होता है जिसका बोध उसी रस, भाव, क्रिया, साधना, समाधि में तथा किसी भी कला रूप में होता है। इसलिये वर्ण जहां भी जैसी भी स्थिति में हो वह अपना बोध सम्पर्क मानवीय चेतना, मानसिकता व आत्मीयता से रखता है तथा वर्ण भौतिक संसार में सर्वत्र भरपूर दृश्यवान है तथा

चित्र में भी वर्ण के समावेश से उसकी विषयानुगत आत्मीयता तथा आन्तरिक भाषा चित्रित की जाती है। ताकि यह मानवीय चेतन में सम्प्रेषण कर इसका मौन बोध करवा सके।

समस्त मानवीय आध्यात्मिकता को एक सूत्र में बांधने के लिये चित्रकला के माध्यम से आध्यात्मिक विषयों का चित्रित सरंक्षण किया गया इसी दृष्टिकोण से भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति में हजारों वर्षों से चित्रण की परम्पराएं रहीं है। आध्यात्मिकता, कला–संस्कृति, वेदों–पुराणों, साहित्यों तथा दार्शनिकता के आध्यात्मिक दृष्टिकोण में भारत का विश्व में सर्वोच्च स्तर माना जाता है।

भारत में अजन्ता के चित्रों में बौद्ध धर्म का चित्रण आध्यात्मिकता का सन्देश देती है वहीं बौद्ध धर्म की प्रज्ञापारमिता ग्रन्थ का पोथी चित्रण किया गया इसी प्रकार जैन शैली के अन्तर्गत व भिन्न–भिन्न धार्मिक ग्रन्थों, पोथियों की सचित्र पाण्डुलिपियों की प्रतियां तैयार की गई ताकि लिपियों के वर्णन के साथ–साथ उसके संयोजित सचित्र रूप को साक्षात् देखकर सर्वसाधारण मानव भी इसकी धार्मिक आध्यात्मिक दार्शनिकता का दृश्यात्मक बोध कर सके। इसी उद्देश्य से भारतीय धार्मिकता ने अपने–अपने क्षेत्र में चित्रकला को आध्यात्मिक ग्रन्थों व दृश्य बोध का अभिन्न अंग मान लिया।

चित्र संख्या 2 कुडंलिनी चिन्ह

आध्यात्मिक योग यात्रा के चरणबद्ध स्तरों को समझने हेतु इनको विभिन्न चरणों में चित्रित बनाया गया व आध्यात्मिक प्रतीकों के रूप प्रदान किये गये व योग साधना के साथ जोड़ा गया, यही चित्रित प्रतीक योग–अभ्यासुओं को बाहर से आन्तरिक यात्रा की ओर आत्मीय दिशा सांकेतिक करने में सहायक हुये जो साधारण मानव के चेतन को भी जागृत करने में सफल हुये। आध्यात्मिकता की चित्रित अभिव्यक्ति के अन्तर्गत भारतीय चित्रकारों ने साधु–सन्तों, महात्माओं, गुरुओं, अवतारों का यथार्थवादी चित्रण किया व मानवीय भक्ति को एक भाषा प्रदान की जिसने मानवीय आत्मीय बोध को मजबूती प्रदान की तथा प्राणवान भौतिक मानव को आध्यात्मिकता और चित्रकला के सांमजस्य से अभिव्यक्त चित्रित आध्यात्मिक सृष्टि का सर्वोच्च दृश्यात्मक बोध करवाया।

संदर्भ सूची

शर्मा विजय (2010), कांगड़ा की चित्राकंन परम्परा, चम्बा शिल्प परिषद
गौतम डा. चमन लाल (1997), घेरण्ड संहिता, संस्कृति संस्थान, बरेली, उ. प्र.
दीक्षित डॉ० अर्चना (1996) संगीत में नाद तत्व, छायानट अंक 77
बसु नन्दलाल (1984) 'दृष्टि और सृष्टि, विश्वभारती, कलकता
प्रकाश वीरेश्वर एवं नुपूर शर्मा (2011) कला दर्शन, कृष्णा प्रकाशन मीडिया मेरठ